डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए., बी.एड्. पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग कोल्हापुर.

संस्तुति पत्र

मै संस्तुति करता हूँ कि कु. जयश्री संभाजी चव्हाण द्वारा लिखित "देवेश ठाकुर के 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यासों में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था " लघु-शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

31.12.05

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur-416004.

स्थान: कोल्हापुर

तिथि: ३१/१२/२००५

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

डॉ. शंकर वसंत मुदगल
एम्.ए.(हिंदी), एम्.ए. (मराठी)
साहित्यरत्न, पीएच्.डी. (मराठी)
उपप्राचार्य, रीडर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
स.भू.एस.के.पाटील महाविद्यालय,
कुरुंदवाड, जि. कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

मै प्रमाणित करता हूँ कि, कु. जयश्री संभाजी चव्हाण ने " देवेश ठाकुर के 'गुरुकुल' तथा 'शिखर पुरुष' उपन्यास में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था " यह लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है। इसमें शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किया हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्रा के कार्य से मैं पूर्णत: संतुष्ट हूँ।

स्थान: कोल्हापुर

तिथि: ३१/१२/२००५

शोध निर्देशक

(डॉ. शंकर वसंत मुदगल)

KHARDEKAR LIBRARY
KOLHAPUR

प्रख्यापन

"देवेश ठाकुर के 'गुरुकुल' तथा 'शिखर पुरुष' उपन्यास में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था " यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान: कोल्हापुर

तिथि: ३१/१२/२००५

शोध छात्रा

कु. जयश्री संभाजी चव्हाण

प्राक्कथन

DR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

SHIVAJI UNIVERSITY ★ LIBRARY ★ KOLHAPUR

प्राक्कथन

एम्.फिल. अध्ययन हेतु शिवाजी विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के पश्चात् मैं मन ही मन बैचेन थी। चाहती थी एक सशक्त विषय को एम्.फिल. के अनुसंधान के लिए चुने। विषय चयन के सिलसिले में मैने प्रा. नंदकुमार रानभरे जी से बात की। मेरी व्यथा और रुचि के अनुसार उन्होंने मुझे देवेश ठाकुर की औपन्यासिक रचनाएँ पढने के लिए कहा। जब मैंने देवेश ठाकुर के 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यास पढे तब मैं अत्यंत प्रभावित हुयी। इसी दौरान मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में संपन्न हो रही दक्षिण भारत हिंदी परिषद की पंचम् राष्ट्रीय संगोष्ठी में देवेश जी से मिलने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। मैंने अपनी अभिलाषा उनके सम्मुख रखी। मेरी बात सुनकर उन्होंने कहा कि, आप 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यासों में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था पर अनुसंधान कार्य कीजिए।

शिक्षा क्षेत्र से देवेश जी जुडे हुए होने के कारण शिक्षा-व्यवस्था का जीता-जागता चित्रण इनके 'गुरुकुल' तथा 'शिखर पुरुष' उपन्यासों में परिलक्षित होता है। इनकी अन्य रचनाएँ भी मैंने पढी। मैंने पाया कि अध्यापक, छात्र, महाविद्यालयीन एवं विश्वविद्यालयीन व्यवस्थापन, प्रशासन एवं शिक्षा क्षेत्र की खामियों एवं कमियों का जितना यथार्थ चित्रण इनकी रचनाओं में हुआ है उतना हिंदी के अन्य रचनाओं में दुर्लभ है। वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था का चित्रण विवेच्य उपन्यासों के प्राणतत्व हैं।

फलस्वरुप मैंने मेरे शोधनिर्देशक, गुरुवर्य डॉ. शंकर मुद्गल जी को देवेश ठाकुर जी के साथ हुई बातों से अवगत कराया। और गहरे विचार-विमर्श के पश्चात् आपने एम्.फिल. के लिए "देवेश ठाकुर के 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यासों में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था" इस विषय पर शोध करने की अनुमति दी। विषय चयन के पीछे श्रद्धेय, गुरुवर्य डॉ. शंकर मुद्गल जी के सहयोग, प्रेरणा तथा प्रोत्साहन के कारण ही मेरा अनुसंधान कार्य एवं यह लघु-शोध प्रबंध इन पृष्ठों पर साकार हो सका।

BABASAHEB AMBEDKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अनुसंधान के आरंभ मे मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न प्रकट हुए थे।

1. देवेश ठाकुर की कृतियों पर उनके व्यक्तित्व का कैसा प्रभाव रहा है ?

2. विवेच्य उपन्यासों में शिक्षा-व्यवस्था का ही चित्रण क्यों किया है ?

3. विवेच्य उपन्यासों में शिक्षा-व्यवस्था की कौन-कौन सी समस्याओं का चित्रण हुआ है ?

4. विवेच्य उपन्यासों का मूल उद्देश्य क्या है ?

5. क्या डॉ. शीतांशु की कथा देवेश जी की निजी कथा है ? वर्तमान युग में यह चरित्र कहाँ तक प्रेरणा दे सकता है ?

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के उपरांत मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए हैं उन्हें मैंने उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु-शोधप्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय - "देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

प्रस्तुत अध्याय में देवेश ठाकुर जी के जीवन परिचय के अंतर्गत पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, विवाह तथा संतान, साहित्य निर्माण एवं पुरस्कारों का साथ ही उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। कृतित्व के अंतर्गत उनके रचनाधर्मी साहित्यकार, समीक्षक, सुधी संपादक, बाल साहित्यिक आदि रुपों का संक्षिप्त परिचय दिया है। उनकी साहित्य कृतियाँ उनके जीवन से किस तरह प्रभावित हुई हैं इसका सार निष्कर्ष में दिया है।

द्वितीय अध्याय- "देवेश ठाकुर के 'गुरुकुल' तथा 'शिखर पुरुष' उपन्यासों का परिचयात्मक अध्ययन"

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य उपन्यासों का परिचयात्मक अध्ययन किया गया है। यह दोनों उपन्यास किस विषय से संबंधित है और उपन्यासों की कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल-वातावरण, शैली, शीर्षक, उद्देश्य आदि का भी विवेचन किया गया है। मुख्यत: इसमें उपन्यासों का विषयगत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

तृतीय अध्याय- "विवेच्य उपन्यासों में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था"

प्रस्तुत अध्याय में शिक्षा-व्यवस्था के महत्व और उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए प्राचीन, मध्यकालीन, आधुनिक भारतीय शिक्षा-व्यवस्था तथा विवेच्य उपन्यासों के कालखंड की शिक्षा-व्यवस्था का संक्षेप में परिचय दिया है। तद्उपरांत विवेच्य उपन्यासों में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था के प्रशासन पक्ष एवं व्यवस्थापन पक्ष का भी विस्तृत विवेचन किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किए है।

चतुर्थ अध्याय- "विवेच्य उपन्यासों में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था का भ्रष्टाचार"

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य उपन्यासों में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था के भ्रष्टाचार को परीक्षाएँ, शोधकार्य, नौकरी, अध्यापक स्त्री-छात्र संबंध आदि बिंदुओं के आधार पर उजागर किया है। निष्कर्ष में इनका सार दर्ज किया है।

पंचम् अध्याय- "विवेच्य उपन्यासों में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था की समस्याएँ"

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य उपन्यासों में प्राप्य शिक्षा-व्यवस्था की समस्याओं का अंकन किया है। इसमें शोधकार्य की समस्या, परीक्षा की समस्या, नौकरी की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, राजनीति की समस्या, अनैतिकता की समस्या आदि समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्ष में इनका सार संक्षेप में विश्लेषित किया है।

उपसंहार-

अंत में उपसंहार के रुप में इस लघु-शोध प्रबंध का निचोड दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

इसमें विवेच्य आधार ग्रंथों की सूची दी हैं।

ऋणनिर्देश-

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध की पूर्ति मेरे आदरणीय, आत्मीय एवं उदार व्यक्तित्ववाले मामा एवं मौसी जिन्होनें मुझे आगे पढने के लिए प्रेरणा दी। उनके प्रति मैं ऋणी रहूँगी। अत: मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम् कर्तव्य मानती हूँ।

इस लघु शोध प्रबंध की संपन्नता का आधार गुरुवर्य डॉ. शंकर मुदगल जी के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व एवं प्रेरक निर्देशन का फल है।

श्रद्धेय डॉ. देवेश जी का अमूल्य योगदान मेरे इस कार्य में मिला। प्रत्यक्ष देवेश जी के सम्पर्क ने मेरी अध्ययन की दिशा को प्रशस्त किया और उन्होंने मुझे अनेक प्रकार की मौलिक सूचनाएँ दी जिसके कारण मेरा मन स्थिर हो सका। डॉ. देवेश जी की कृपा के बिना यह शोध संपन्न होने में जरुर कठिनाइयाँ आती। मैं उनकी हृदयपूर्वक आभारी हूँ।

हिंदी विभागाध्यक्ष आदरणीय, गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष गुरुवर्य डॉ. पी.एस्. पाटील, प्रा. नंदकुमार रानभरे, अध्यापक विश्वास पाटील जी इन सभी ने अपने कामों से वक्त निकालकर समय-समय पर मुझे इस शोध कार्य के लिए मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दिया अत: उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में जिनका सहृदय एवं आशीश सदैव मेरे साथ रहा और जिनकी प्रेरणा तथा सहयोग के बल पर मैं यह कार्य संपन्न कर सकी वे मेरे दादा-दादी, परम्-पूज्य माता-पिता, मेरे सभी भाई-बहन, चाचा-चाची, भाभी, जिजाजी और प्रा. विजया रानभरे जी इन सब के द्वारा मिली प्रेरणा के प्रति मैं उनकी जीवन भर कृतज्ञ रहूँगी।

इस कार्य को संपन्न बनाने में मुझे हर समय सहयोग देनेवाली प्रा. सुनीता तळाशीकर, प्रा. सौ. शुभदा पाटील एवं चव्हाण मॅडम आदि के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

मेरे परम स्नेही द्राक्षयणी शिंदे, रमेश खबाले, रशीद तहसीलदार, निवेदिता तोडकर और शशिकांत नांदणीकर आदि हितैषियों की मैं आभारी हूँ। साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के कर्मचारियों के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध का निर्धारित समय और सुंदर रुप मे टंकन करनेवाले गणेश तोडकर की मैं आभारी हूँ।

अंत मे उन ज्ञात, अज्ञात व्यक्ति जिनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहयोग मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ उन सबके प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ और विनम्रता के साथ विद्वानों के सम्मुख इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान- कोल्हापूर

तिथि-